ललितविस्तरः

७ जन्मपरिवर्तः सप्तमः

(отрывок)

Признаки великого человека.

तेन च समयेन हिमवतः पर्वतराजस्य पार्श्वे असितो नाम महर्षिः प्रतिवसति स्म पञ्चाभिज्ञः सार्धं नरदत्तेन भागिनेयेन।

asita - темный, черный; nom. pr. мудрец Асита;
abhijñā *f* - высшее или сверхъестественное знание, интуиция (обычно называют пять или шесть - divyacakṣus, divyaśrotra, paracittajñāna, pūrvanivāsānusmṛti, ṛddhi, āśravakṣayajñāna);
bhāgineya *m* - племянник, сын сестры;

स बोधिसत्त्वस्य जातमात्रस्य बहून्याश्चर्याद्भुतप्रातिहार्याण्यद्राक्षीत्।

āścarya - чудесный, удивительный; *n* чудо, изумление, удивление;
adbhuta - дивный, чудный, удивительный; невидимый, таинственный;
prātihārya *n* - сверхъестественное событие, чудесное явление, чудо;

गगनतलगतांश्च देवपुत्रान् बुद्धशब्दमनुश्रावयतोऽम्बराणि च भ्रामयत इतस्ततः प्रमुदितान् भ्रमतोऽद्राक्षीत्।

anuśrāvaya *buddh.* - провозглашать, оглашать, объявлять;
ambara *n* - небосвод; воздушное пространство;

तस्यैतदभूत्-यन्वहं व्यवलोकयेयमिति।

vy-ava√lokaya *caus.* - смотреть, рассматривать, замечать;

स दिव्येन चक्षुषा सर्वं जम्बुद्वीपमनुविलोकयन्नद्राक्षीत् कपिलाह्वये महापुरवरे राज्ञः शुद्धोदनस्य गृहे कुमारं जातं शतपुण्यतेजस्तेजितं सर्वलोकमहितं द्वात्रिंशन्महापुरुषलक्षणैः समलंकृतगात्रम्।

jambudvīpa *m* - центральный из семи континентов, окружающих гору Меру;
kapilāhvaya *buddh.* - названный Капила(васту), город, в котором родился Будда;
mahita *buddh.* - почитаемый, уважаемый;

दृष्ट्वा च पुनर्नरदत्तं माणवकमामन्त्रयते स्म-यत् खलु माणवक जानीया जम्बुद्वीपे महारत्नमुत्पन्नम्।

ā√mantraya Ā. - обращаться, окликать, звать;
māṇavaka *m* - юноша; ученик, воспитанник;

कपिलवस्तुनि महानगरे राज्ञः शुद्धोदनस्य गृहे कुमारो जातः शतपुण्यतेजस्तेजितः सर्वलोकमहितो द्वात्रिंशन्महापुरुषलक्षणैः समन्वागतः।

सचेत्सोऽगारमध्यावसिष्यति, राजा भविष्यति चतुरङ्गश्चक्रवर्ती विजितवान् धार्मिको धर्मराजो जानपदस्थामवीर्यप्राप्तः सप्तरत्नसमन्वागतः।

adhy-ā√vas I P. - жить, обитать;
caturaṅga - четырехчленный, о войске - полная армия, сост. из пехоты, конницы, слонов и колесниц;
cakravartin *m* - (*букв.* поворачивающий колесо) верховный царь, совершенный правитель;
jānapada *m* - житель деревни, селянин; *buddh.* страна;
sthāman *n* - место, положение; сила;

तस्येमानि सप्त रत्नानि भवन्ति।

तद्यथा-चक्ररत्नं हस्तिरत्नं अश्वरत्नं मणिरत्नं स्त्रीरत्नं गृहपतिरत्नं परिणायकरत्नम्। एवं सप्तरत्नसंपूर्णश्च।

gṛhapati *m* - домохозяин, глава семьи; *buddh.* казначей;

अस्य पुत्रसहस्रं भविष्यति शूराणां वीराणां वराङ्गरूपिणां परसैन्यप्रमर्दकानाम्।

pramardaka *buddh.* - уничтожающий, разрушающий;

स इमं महापृथिवीमण्डलं समुद्रपरिखमदण्डेनाशस्त्रेण स्वेन (धर्मेण) बलेनाभिभूयाभिनिर्जित्य राज्यं करिष्यत्यैश्वर्याधिपत्येन।

maṇḍala *n* - круг, (солнечный) диск, округ, страна; множество;
-parikha *buddh.* - ров, канава, препятствие;
abhi√bhū I P. - охватывать; превозмогать, преодолевать, превосходить; нападать, преследовать;
abhi-nir√ji *buddh.* (abs. или p.p.) - побеждать;

सचेत्पुनरगारादनगारिकां प्रव्रजिष्यति, तथागतो भविष्यति अर्हन् सम्यक्संबुद्धो नेता अनन्यनेयः शास्ता लोके संबुद्धः।

agāra *m, n* - дом;
anagārikā *f buddh.* - аскетическая жизнь, лишенная дома;

तदेतर्ह्युपसंक्रमिष्यावस्तद् द्रष्टुमिति॥

अथ खल्वसितो महर्षिः सार्धं नरदत्तेन भागिनेयेन राजहंस इव गगनतलादभ्युद्गम्य समुत्प्लुत्य येन कपिलवस्तु महानगरं तेनोपसंक्रामत्।

rājahaṃsa *m* - вид лебедя, гуся или фламинго;
abhy-ud√gam I P. - подниматься, восходить;
sam-ut√plu I - прыгать, двигаться прыжками;

उपसंक्रम्य ऋद्धिं प्रतिसंहृत्य पद्भ्यामेव कपिलवस्तु महानगरं प्रविश्य येन राज्ञः शुद्धोदनस्य निवेशनं तेनोपसंक्रामत्। उपसंक्रम्य राज्ञः शुद्धोदनस्य गृहद्वारेऽस्थात्॥

ṛddhi *f* - счастье, успех, удача, благополучие; *buddh.* - сверхъестественная, магическая сила;
prati-saṃ√har I U. - удалять, уносить; уменьшать, отводить, останавливать;

इति हि भिक्षवोऽसितो महर्षिः पश्यति स्म राज्ञः शुद्धोदनस्य गृहद्वारेऽनेकानि प्राणिशतसहस्राणि संनिपतितानि।

saṃ-ni√pat I P. - прилететь, придти, собраться;

अथ खल्वसितो महर्षिर्दौवारिकमुपसंक्रम्यैवमाह-गच्छ त्वं भोः पुरुष राज्ञः शुद्धोदनस्य, निवेदय द्वारे ऋषिर्व्यवस्थित इति।

dauvārika *m* - привратник;

परमेति दौवारिकोऽसितस्य महर्षेः प्रतिश्रुत्य येन राजा शुद्धोदनस्तेनोपसंक्रामत्।

उपसंक्रम्य कृताञ्जलिपुटो राजानं शुद्धोदनमेवमाह-यत् खलु देव जानीया ऋषिर्जीर्णो वृद्धो महल्लको द्वारे स्थितः।

puṭa - сложивший;

एवं च वदति-राजानमहं द्रष्टुकाम इति।

अथ राजा शुद्धोदनोऽसितस्य महर्षेरासनं प्रज्ञाप्य तं पुरुषमेवमाह-प्रविशतु ऋषिरिति।

pra√jñāpaya - указывать, показывать; вызывать, приглашать;

अथ स पुरुषो राजकुलान्निष्क्रम्यासितं महर्षिमेवमाह-प्रविशेति॥

rājakula *n* - царская семья, царский дворец;

अथ खल्वसितो महर्षिर्येन राजा शुद्धोदनस्तेनोपसंक्रामत्।

उपसंक्रम्य पुरतः स्थित्वा राजानं शुद्धोदनमेवमाह-जय जय महाराज, चिरमायुः पालय, धर्मेण राज्यं कारयेति॥

अथ स राजा शुद्धोदनोऽसितस्य महर्षेरर्घपाद्यमर्चनं च कृत्वा साधु सुष्ठु च परिगृह्य आसनेनोपनिमन्त्रयते स्म।

argha *m* - цена; почетный дар; почтительный прием гостей (с поднесением воды, еды, цветов);
pādya *n* - вода для омовения ног;
suṣṭhu *adv.* - красиво, правильно;
upa-ni√mantraya P. - приглашать, предлагать;

सुखोपविष्टं चैनं ज्ञात्वा सगौरवः सुप्रतीत एवमाह-न स्मराम्यहं तव ऋषे दर्शनम्। तत्केनार्थेनेहाभ्यागतोऽसि, किं प्रयोजनम्?

gaurava *n* - тяжесть, важность, глубокое уважение;
pratīta - узнанный, известный; убежденный; уважительный; радостный, удовлетворенный;

एवमुक्तेऽसितो महर्षी राजानं शुद्धोदनमेतदवोचत्-पुत्रस्ते महाराज जातस्तमहं द्रष्टुकाम इहागत इति॥

राजा आह-स्वपिति महर्षे कुमारः। मुहूर्तमागमय यावदुत्थास्यतीति॥

ऋषिरवोचत्-न महाराज तादृशा महापुरुषाश्चिरं स्वपन्ति। जागरशीलास्तादृशाः सत्पुरुषा भवन्ति॥

इति हि भिक्षवो बोधिसत्त्वोऽसितस्य महर्षेरनुकम्पया जागरणनिमित्तमकरोत्।

anukampā *f* - сочувствие, сострадание;

अथ खलु राजा शुद्धोदनः सर्वार्थसिद्धं कुमारमुभाभ्यां पाणिभ्यां साधु च सुष्ठु चानुपरिगृह्य असितस्य महर्षेरन्तिकमुपनामयति स्म॥

upa√nāmaya *caus. buddh.* - давать, приносить; представлять, вводить куда-либо;

इति हि असितो महर्षिर्बोधिसत्त्वमवलोक्य द्वात्रिंशता महापुरुषलक्षणैः समन्वागतमशीत्यनुव्यञ्जनसुविचित्रगात्रं शक्रब्रह्मलोकपालातिरेकवपुषं दिनकरशतसहस्रातिरेकतेजसं सर्वाङ्गसुन्दरं दृष्ट्वा

anuvyañjana *n* - малый, вторичный признак (обычно это 80 вторичных признаков великого человека);
vicitra - пестрый, разный; дивный, прекрасный;
atireka *m* - излишек, избыток; *buddh.* atireka- очень, чрезмерно;
vapus *n* - тело, осанка, вид; форма, рост; чудное явление, явление; величие, красота;

चोदानमुदानयति स्म-आश्चर्यपुद्गलो बतायं लोके प्रादुर्भूत,

udāna *n, m* - торжественное и радостное высказывание; выдох;
√udānaya *den.* - произносить, восклицать;
pudgala *m* - тело; душа, личность; индивидуальность; *buddh.* человек, создание, душа;
bata *ij.* - ох! ах!
prādur √bhū I P. стать видимым, появиться, возникать;

महाश्चर्यपुद्गलो बतायं लोके प्रादुर्भूतः इत्युत्थायासनात्कृताञ्जलिपुटो बोधिसत्त्वस्य चरणयोः प्रणिपत्य प्रदक्षिणीकृत्य च बोधिसत्त्वमङ्केन परिगृह्य निध्यायन्नवस्थितोऽभूत्।

pra-ṇi√pat I P.- склоняться, простираться (+Acc, Dat, Loc.);
ni√dhyā (I P. nidhyāyati) - наблюдать, размышлять;

सोऽद्राक्षीद्बोधिसत्त्वस्य द्वात्रिंशन्महापुरुषलक्षणानि यैः समन्वागतस्य पुरुषपुद्गलस्य द्वे गती भवतो नान्या। सचेदगारमध्यावसति राजा भवति चतुरङ्गश्चक्रवर्ती पूर्ववद्यावदेवैश्वर्याधिपत्येन।

pūrvavat *adv.* - как прежде, как было прежде сказано;

सचेत्पुनरगारादनगारिकां प्रव्रजति तथागतो भविष्यति विघुष्टशब्दः सम्यक्संबुद्धः।

vighuṣṭa (p.p. от vi√ghuṣ) - провозглашенный, звучный;

स तं दृष्ट्वा प्रारोदीदश्रूणि च प्रवर्तयन् गम्भीरं च निश्वसति स्म॥

pra√rud II P. - заплакать, зарыдать;
pra√vart I Ā. - приходить в движение; возникать, появляться, начинаться, наступать, быть налицо;

अद्राक्षीद्राजा शुद्धोदनोऽसितं महर्षिं रुदन्तमश्रूणि च प्रवर्तयमानं गम्भीरं च निश्वसन्तम्। दृष्ट्वा च संहर्षितरोमकूपजातस्त्वरितत्वरितं दीनमना असितं महर्षिमेतदवोचत्-

saṃharṣita (p.p. *om* saṃharṣ) - поднятый, вставший дыбом (о волосках на теле);
romakūpa (roma-kūpa) *m, n* - поры на коже;

किमिदमृषे रोदसि अश्रूणि च प्रवर्तयसि गम्भीरं च निश्वससि? मा खलु कुमारस्य काचिद्विप्रतिपत्तिः॥

vipratipatti *f buddh.* - грех; беда, несчастье;

एवमुक्तेऽसितो महर्षी राजानं शुद्धोदनमेवमाह-नाहं महाराज कुमारस्यार्थेन रोदिमि, नाप्यस्य काचिद्विप्रतिपत्तिः। किं त्वात्मानमहं रोदिमि। तत्कस्माद्धेतोः? अहं च महाराज जीर्णो वृद्धो महल्लकः। अयं च सर्वार्थसिद्धः कुमारोऽवश्यमनुत्तरां सम्यक्संबोधिमभिसंभोत्स्यति।

अभिसंबुध्य चानुत्तरं धर्मचक्रं प्रवर्तयिष्यति अप्रवर्तितं श्रमणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेण वा अन्येन वा पुनः केनचिल्लोके सहधर्मेण।

śramaṇa *m buddh.* - нищенствующий монах;
saha *m*, sahā *f* - Земля, название нашей вселенной;

सदेवकस्य लोकस्य हिताय सुखाय धर्मं देशयिष्यति आदौ कल्याणं मध्ये कल्याणं पर्यवसाने कल्याणम्।

kalyāṇa - счастливый, благополучный; добрый, хороший; красивый, прекрасный;
paryavasāna *n* - конец, завершение;

स्वर्थं सुव्यञ्जनं केवलं परिपूर्णं परिशुद्धं पर्यवदातं ब्रह्मचर्यं सत्त्वानां संप्रकाशयिष्यति।

vyañjana *n* - знак, признак; украшение; приправа;
paripūrṇa (p.p. от pari√par) - полный, наполненный, завершенный, совершенный, целый;
paryavadāta *buddh.* - совершенно чистый;
saṃ√prakāśaya *caus.*- освещать, разъяснять, раскрывать;

अस्मात्तं धर्मं श्रुत्वा जातिधर्माणः सत्त्वा जात्या परिमोक्षन्ते।

jātidharman (jāti-dharman) *n* - каста, социальная группа; долг, обязанности;

एवं जराव्याधिमरणशोकपरिदेवदुःखदौर्मनस्योपायासेभ्यः परिमोक्षन्ते।

parideva *m* - жалоба;
daurmanasya *n* - расстройство, отчаяние; уныние, отчаяние, упадок духа; грусть, тоска;
upāyāsa *m buddh.* - недовольство, раздражение, смятение;

रागद्वेषमोहाग्निसंतप्तानां सत्त्वानां सद्धर्मजलवर्षेण प्रह्लादनं करिष्यति।

prahlādana - радующий, освежающий;

नानाकुदृष्टिग्रहणप्रस्कन्धानां सत्त्वानां कुपथप्रयातानामृजुमार्गेण निर्वाणपथमुपनेष्यति।

praskandha *buddh.* - упавший, погруженный;
ṛju - прямой, правильный;

संसारपञ्जरचारकावरुद्धानां क्लेशबन्धनबद्धानां बन्धननिर्मोक्षं करिष्यति।

pañjara *n* - клетка, решетка; сеть;
cāraka *m buddh.* - тюрьма;
ava√rudh VII U. - удерживать, запирать; осаждать;
kleśa *m* - трудность, неудобство; мучение, страдание; *buddh.* загрязнение (обычно упоминают шесть *клеш*: rāga *страсть*, pratigha *враждебность*, māna *гордыня*, āvidya *невежество*, kudṛṣṭi *ложные взгляды*, vicikitsā *сомнение*);

अज्ञानतमस्तिमिरपटलपर्यवनद्धनयनानां सत्त्वानां प्रज्ञाचक्षुरुत्पादयिष्यति।

timira - мрачный; *n* темнота, мрак;
paṭala *n* - оболочка, покров, крыша; сгусток; масса, множество;
paryavanaddha *buddh.* - покрытый, скрытый, окруженный;

क्लेशशल्यविद्धानां सत्त्वानां शल्योद्धरणं करिष्यति।

śalya *m* - острие (стрелы), шип, колючка; вред, ущерб;

तद्यथा महाराज औदुम्बरपुष्पं कदाचित्कर्हिचिल्लोके उत्पद्यते, एवमेव महाराज कदाचित्कर्हिचिद्बहुभिः कल्पकोटिनयुतैर्बुद्धा भगवन्तो लोके उत्पद्यन्ते।

audumbara - принадлежащий дереву удумбара или смоковнице (Ficus religiosa);
nayuta *m pl.*- сто тысяч миллионов, множество;

सोऽयं कुमारोऽवश्यमनुत्तरां सम्यक्संबोधिमभिसंभोत्स्यते।

अभिसंबुध्य च सत्त्वकोटीनियुतशतसहस्राणि संसारसागरात् पारमुत्तारयिष्यति, अमृते च प्रतिष्ठापयिष्यति।

pāra - переправляющий; *m, n* противоположный берег; конец, граница;
prati√ṣṭhāpaya *caus. buddh.* - установить;

वयं च तं बुद्धरत्नं न द्रक्ष्यामः।

इत्येव तदहं महाराज रोदिमि परिदीनमना दीर्घं च निश्वसामि यदहमिमं नारोग्येऽपि राधयिष्यामि॥

paridīna - подавленный, обеспокоенный, страдающий;
ārogya - здоровый; *n* здоровье;
√rādhaya *caus.* - удовлетворять, умилостивлять;

यथा ह्यस्माकं महाराज मन्त्रवेदशास्त्रेष्वागच्छति-नार्हति सर्वार्थसिद्धः कुमारोऽगारमध्यावसितुम्।

ā√gam I P. *buddh.* - передавать, записывать; искать, охотиться;

तत्कस्य हेतोः? तथा हि महाराज सर्वार्थसिद्धः कुमारो द्वात्रिंशता महापुरुषलक्षणैः समन्वागतः।

कतमैर्द्वात्रिंशता? तद्यथा। उष्णीषशीर्षो महाराज सर्वार्थसिद्धः कुमारः।

uṣṇīṣa *n* - тюрбан; *buddh.* выпуклость на макушке;

अनेन महाराज प्रथमेन महापुरुषलक्षणेन समन्वागतः सर्वार्थसिद्धः कुमारः।

भिन्नाञ्जनमयूरकलापाभिनीलवल्लितप्रदक्षिणावर्तकेशः। समविपुललाटः।

añjana *n* - темная краска, тушь;
kalāpa *m* - связка, узел; орнамент, украшение; павлиний хвост;
abhinīla - очень темный;
vallita *buddh.* - кудрявый, волнистый, вьющийся (о волосах) (от skr. valli - лиана);
āvarta *m* - вращение, поворот, круговорот;
vipula - обширный, большой;
lalāṭa *n* - лоб;

ऊर्णा महाराज सर्वार्थसिद्धस्य कुमारस्य भ्रुवोर्मध्ये जाता हिमरजतप्रकाशा।

ūrṇā *f* - шерсть; *buddh.* завиток волос между бровями;
rajata - серебристый; *n* серебро;

गोपक्ष्मनेत्रः। अभिनीलनेत्रः।

pakṣman *m* - ресница;

समचत्त्वारिंशद्दन्तः। अविरलदन्तः। शुक्लदन्तः।

avirala - густой, частый; соприкасающийся, прилегающий;

ब्रह्मस्वरो महाराज सर्वार्थसिद्धः कुमारः।

रसरसाग्रवान्। प्रभूततनुजिह्वः। सिंहहनुः।

rasarasāgra *n* - превосходный вкус;
jihvā *f* - язык;
hanu *f* - челюсть;

सुसंवृत्तस्कन्धः। सप्तोत्सदः। चितान्तरांसः।

saṃvṛtta *buddh.* - округлый;
utsada *m buddh.* - выпуклость, выступ (семь выступов на теле - руки, ноги, плечи, шея);
cita *buddh.* - плотный, густой, толстый, большой;
antarāṃsa (antarā-aṃsa) *m* - грудь;

सूक्ष्मसुवर्णवर्णच्छविः। स्थितोऽनवनतप्रलम्बबाहु। सिंहपूर्वार्धकायः।

sūkṣma - тонкий, маленький; приятный, нежный; аккуратный;
chavi - кожа, цвет лица;
ava√nam I P. (p.p.avanata) - наклоняться, кланяться;
pralamba - свисающий, спускающийся;

न्यग्रोधपरिमण्डलो महाराज सर्वार्थसिद्धः कुमारः।

nyagrodha *m* - баньян (Ficus Indica);
parimaṇḍala - округлый, круглый; *n* круг, окружность;

एकैकरोमा। ऊर्ध्वाग्राभिप्रदक्षिणावर्तरोमाः।

abhipradakṣiṇam *adv.* - вправо;

कोशोपगतवस्तिगुह्यः। सुविवर्तितोरुः। एणेयमृगराजजङ्घः।

kośa *m* - ящик, сундук; кладовая; словарь, сборник; кокон, бутон; пенис, мошонка;
vasti *m, f* - низ живота, мочевой пузырь;
vivartita - округленный;
ūru *m* - бедро;
eṇeya *m* (skr. eṇa) - черная антилопа;
jaṅghā *f* - голень (нога от ступни до колена);

दीर्घाङ्गुलिः। आयतपार्ष्णिपादः। उत्सङ्गपादः।

āyata - длинный, вытянутый;
pārṣṇi *f* - обратная сторона, спина; пятка;
utsaṅga *m* - колени; склон; углубление, впадина;

मृदुतरुणहस्तपादः। जालाङ्गुलिहस्तपादः।

taruṇa - молодой, нежный;
jāla *n* - сеть, сетка; перепонка;

दीर्घाङ्गुलिरधःक्रमतलयोर्महाराज सर्वार्थसिद्धस्य कुमारस्य चक्रे जाते चि (अर्चिष्मती प्रभास्वरे सिते) सहस्रारे सनेमिके सनाभिके।

krama *m* - шаг, путь; подошва;
tala *n* - плоскость, поверхность; дно, долина; ладонь, подошва;
arciṣmant - излучающий, горящий; *n* огонь;
prabhāsvara - ярко сияющий;
ara *m* - спица (колеса);
nemi *f* - обод колеса, круг, окружность;
nābhi *f, m* пупок, углубление, центр;

सुप्रतिष्ठितसमपादो महाराज सर्वार्थसिद्धः कुमारः।

supratiṣṭhita - твердо стоящий;

अनेन महाराज द्वात्रिंशत्तमेन महापुरुषलक्षणेन समन्वागतः सर्वार्थसिद्धः कुमारः।

न च महाराज चक्रवर्तिनामेवंविधानि लक्षणानि भवन्ति।

बोधिसत्त्वानां च तादृशानि लक्षणानि भवन्ति॥

संविद्यन्ते खलु पुनर्महाराज सर्वार्थसिद्धस्य कुमारस्य कायेऽशीत्यनुव्यञ्जनानि, यैः समन्वागतः सर्वार्थसिद्धः कुमारो नार्हत्यगारमध्यावसितुम्।

अवश्यमभिनिष्क्रमिष्यति प्रव्रज्यायै। कतमानि च महाराज तान्यशीत्यनुव्यञ्जनानि?

pravrajyā *f* - уход из дома; жизнь странствующего отшельника;

तद्यथा-तुङ्गनखश्च महाराज सर्वार्थसिद्धः कुमारः।

tuṅga - высокий, выступающий, выпуклый;

ताम्रनखश्च स्निग्धनखश्च वृत्ताङ्गुलिश्च अनुपूर्वचित्राङ्गुलिश्च गूढशिरश्च गूढगुल्फश्च घनसंधिश्च अविषमसमपादश्च आयतपार्ष्णिश्च महाराज सर्वार्थसिद्धः कुमारः।

tāmra - темно-красный, цвета меди; *n* медь;
snigdha (*p.p. от* √snih) - нежный, клейкий, жирный, густой; гладкий, ровный;
anupūrva - следующий друг за другом; правильный, обычный;
śirā *f* - вена;
gulpha *m* - лодыжка, щиколотка;
ghana - крепкий, плотный; твердый, густой;
saṃdhi *m* - соединение, слияние; сустав, сочленение; сумерки;
viṣama - плохой, неровный, неодинаковый;

स्निग्धपाणिलेखश्च तुल्यपाणिलेखश्च गम्भीरपाणिलेखश्च अजिह्मपाणिलेखश्च अनुपूर्वपाणिलेखश्च बिम्बोष्ठश्च नोच्चवचनशब्दश्च मृदुतरुणताम्रजिह्वश्च गजगर्जिताभिस्तनितमेघस्वरमधुरमञ्जुघोषश्च परिपूर्णव्यञ्जनश्च महाराज सर्वार्थसिद्धः कुमारः।

lekha *m* - черта, линия, письмо;
tulya - равный, равнозначный;
ajihma - прямой, не кривой;
bimba *m, n* - ярко-красный плод Momordica Monadelpha;
oṣṭha *m* - губа;
abhistanita *buddh.* - гремящий, грохочущий;
mañju - красивый, прелестный;

प्रलम्बबाहुश्च शुचिगात्रवस्तुसंपन्नश्च मृदुगात्रश्च विशालगात्रश्च अदीनगात्रश्च अनुपूर्वोन्नतगात्रश्च सुसमाहितगात्रश्च सुविभक्तगात्रश्च पृथुविपुलसुपरिपूर्णजानुमण्डलश्च वृत्तगात्रश्च महाराज सर्वार्थसिद्धः कुमारः।

gātra *n* - тело, член тела;
vastu *здесь употреблено вместо* vastra *n* платье, одежда, материя;
saṃpanna (*p.p. от* saṃ√pad) - превосходный, совершенный, одаренный, полный ч.-л.;
viśāla - беспредельный, большой, огромный; широкий; вытянутый; растянутый;
dīna - недостаточный, ограниченный скудный; печальный, несчастный;
unnata - поднятый, высокий, благородный;
susamāhita - красиво украшенный; хорошо собранный; внимательный; сосредоточенный;
suvibhakta - хорошо распределенный, пропорциональный, симметричный;
jānumaṇḍala *n* (skr. jānu *m, n*) - колено;

सुपरिमृष्टगात्रश्च अजिह्मवृषभगात्रश्च अनुपूर्वगात्रश्च गम्भीरनाभिश्च अजिह्मनाभिश्च अनुपूर्वनाभिश्च शुच्याचारश्च ऋषभवत्समन्तप्रासादिकश्च परमसुविशुद्धवितिमिरालोकसमन्तप्रभश्च नागविलम्बितगतिश्च महाराज सर्वार्थसिद्धः कुमारः।

parimṛṣṭa (p.p. *от* pari√marj) - плавный, гладкий;
vṛṣabha - сильный, мощный; *m* бык;
ācāra *n* - поведение, образ жизни, правило; хорошее поведение, благочестие;
samanta - связанный, соединенный, совместный, полный, целый;
prāsādika *buddh.* - милостливый, честный; красивый, привлекательный;
vitimira - светлый, незатемненный;
āloka *m* - вид, взгляд;
vilambita (p.p. *от* vi√lamb) - висящий; медленный;

सिंहविक्रान्तगतिश्च ऋषभविक्रान्तगतिश्च हंसविक्रान्तगतिश्च अभिप्रदक्षिणावर्तगतिश्च वृत्तकुक्षिश्च मृष्टकुक्षिश्च अजिह्मकुक्षिश्च चापोदरश्च व्यपगतछन्ददोषनीलकालकादुष्टशरीरश्च वृत्तदंष्ट्रश्च महाराज सर्वार्थसिद्धः कुमारः।

vikrānta (p.p. *от* vi√kram) - шагающий прочь; сильный, мощный, победоносный;
kukṣi *m* - живот;
cāpa *m, n* - лук;
chanda *m* - желание, причуда, страсть; рвение, усердие, воля;
kālaka - черный; *buddh.* темное пятно (на одежде); угорь, прыщ;

तीक्ष्णदंष्ट्रश्च अनुपूर्वदंष्ट्रश्च तुङ्गनासश्च शुचिनयनश्च विमलनयनश्च प्रहसितनयनश्च आयतनयनश्च विशालनयनश्च नीलकुवलयदलसदृशनयनश्च सहितभ्रूश्च महाराज सर्वार्थसिद्धः कुमारः।

śuci - чистый, блестящий; честный;
kuvalaya *n* - голубая водяная лилия;
dala *n* - лист, лепесток;
sahita - соединенный, объединенный, снабженный;

चित्रभ्रूश्च असितभ्रूश्च संगतभ्रूश्च अनुपूर्वभ्रूश्च पीनगण्डश्च अविषमगण्डश्च व्यपगतगण्डदोषश्च अनुपहतक्रुष्टश्च सुविदितेन्द्रियश्च सुपरिपूर्णेन्द्रियश्च महाराज सर्वार्थसिद्धः कुमारः।

saṃgata (p.p. *om* saṃ√gam) - соединенный, собранный; подходящий, соразмерный с ч.-л.;
gaṇḍa *m* - щека;
anupahata - не затронутый ч.-л., неиспорченный, неповрежденный;
kruṣṭa (p.p. *om* √kruś) - кричащий; *n* крик, плач;
vidita (p.p. *om* √vid II P.) - известный, понятный, узнанный, ученый; представленный;

संगतमुखललाटश्च परिपूर्णोत्तमाङ्गश्च असितकेशश्च सहितकेशश्च (सुसंगतकेशश्च) सुरभिकेशश्च अपरुषकेशश्च अनाकुलकेशश्च अनुपूर्वकेशश्च सुकुञ्चितकेशश्च श्रीवत्सस्वस्तिकनन्द्यावर्तवर्धमानसंस्थानकेशश्च महाराज सर्वार्थसिद्धः कुमारः।

uttamāṅga (uttama-aṅga) *n* - голова;
surabhi - благоухающий, ароматный; *n* духи;
paruṣa - узловатый; неровный; жесткий, грубый;
anākula - не спутанный, не запутанный;
kuñcita (p.p. *om* √kuñc) - изогнутый, загнутый, искривленный; кудрявый, вьющийся (о волосах);
śrīvatsa *m* - знак или завиток волос на груди божеств и божественных созданий, изображается как белый крестообразный цветок;
nandi *f* - радость;
saṃsthāna *n* - спокойствие, пребывание; вид, форма;

इमानि तानि महाराज सर्वार्थसिद्धस्य कुमारस्याशीत्यनुव्यञ्जनानि, यैः समन्वागतः सर्वार्थसिद्धः कुमारो नार्हत्यगारमध्यावसितुम्। अवश्यमभिनिष्क्रमिष्यति प्रव्रज्यायै॥

अथ खलु राजा शुद्धोदनोऽसितस्य महर्षेः सकाशात्कुमारस्येदं व्याकरणं श्रुत्वा संतुष्ट उदग्र आत्तमनाः प्रमुदितः प्रीतिसौमनस्यजात उत्थायासनाद्बोधिसत्त्वस्य चरणयोः प्रणिपत्येमां गाथामभाषत—

vyākaraṇa *n* - различие, анализ, грамматика; *buddh.* объяснение, разъяснение; предсказание;
udagra - радостный, довольный, счастливый;
āttamanas, āptamanas *buddh.* - радостный, обрадованный, довольный; восхищенный;
saumanasya - радующий; *n* радость, жизнерадостность; удовлетворенность;

वन्दितस्त्वं सुरैः सेन्द्रैः ऋषिभिश्चासि पूजितः।
वैद्य सर्वस्य लोकस्य वन्देऽहमपि त्वां विभो॥५५॥

vaidya *m* - ученый, врачеватель;

इति हि भिक्षवो राजा शुद्धोदनोऽसितं महर्षिं सार्धं नरदत्तेन भागिनेयेनानुरूपेण भक्तेन संतर्पयति स्म।

bhakta *n* - еда;
saṃ√tarpaya *caus.* - насыщать, кормить, удовлетворять;

संतर्प्याभिच्छाद्य प्रदक्षिणमकरोत्।

abhi√cchādaya - покрывать; *buddh.* дарить, преподносить;
pradakṣiṇaṃ √kar VIII U. - обходить по часовой стрелке почитаемое лицо или предмет;

अथ खल्वसितो महर्षिस्तत एवद्ध्र्या विहायसा प्राक्रमत्, येन स्वाश्रमस्तेनोपासंक्रामत्॥

vihāyas *n* - воздух, простор;

अथ खलु द्वयं संक्रम्य तत्र खल्वसितो महर्षिर्नरदत्तं माणवकमेतदवोचत्
-यदा त्वं नरदत्त शृणुया बुद्धो लोके उत्पन्न इति, तदा त्व गत्वा तस्य शासने प्रव्रजेः।

śāsana *n* - приказ, повеление; приглашение; учение;

तत्ते भविष्यति दीर्घरात्रमर्थाय हिताय सुखायेति॥

dīrgharātram (dīrgha-rātram) *buddh. adv.* - долго, долгое время;